समस्याओं का आध्यात्मिक समाधान

अज्ञानी के लिए यह सारा संसार दु:खमय है, समस्याओं से भरा हुआ है । ज्ञानी के लिए यह संसार आनन्दमय है, समस्याओं से शून्य है। सब समस्याओं का समाधान है ज्ञानी होना, जानना और देखना। जो नहीं जानता, जो नहीं देखता, वह सदा समस्याओं से घिरा रहता है। जो जानता है, देखता है, वह समस्याओं का पार पा जाता है। सब समस्याओं का समाधान है जानना और देखना। यथार्थ में जितनी समस्याएं हैं, उतने ही समाधान हैं। कोई भी ऐसी समस्या नहीं है। जिसका समाधान न हो । समस्या नहीं है तो समाधान की कोई जरूरत ही नहीं है। प्रत्येक समस्या का समाधान है । किन्तु कोई समाधान ऐसा भी होता है, जो सब समस्याओं का समाधान होता है। सारी समस्याएं उससे समाहित हो जाती हैं। वह एक समाधान है- जानना, देखना । इसका अर्थ है - चेतना को जागृत करना। ज्ञान चेतना को जागृत करता है। अज्ञान का अर्थ है - वासना का चेतना पर हावी हो जाना। जब चेतना वासना से आकान्त होती है, तब वह घूमाती है, पहुंचाती नहीं । जब चेतना जागृत होती है , शुद्ध होती है , तब वह स्वयं एक मार्ग बन जाती है, जो लक्ष्य तक पहुंचा देती है।

एक होता है गोल चक्कर और एक होता है मार्ग। मार्ग पहुंचाता है। गोल चक्कर घुमाता है, किन्तु पहुंचाता नहीं।

प्राणी-वैज्ञानिक डां.फेवरी ने कुछ कीड़ों को थाली में रखा । वह थाली गोल थी। कीड़े ऐसी जाति के थे जो अपने नेता के पीछे-पीछे चलते थे । नेता आगे चलने लगा। कीड़े पीछे-पीछे घूमने लगे । चक्कर लगाना प्रारम्भ हुआ। थाली गोल थी । सभी कीड़े गोलाकार घूमने लगे । वे तब घूमते रहे जब तक कि वे सब थककर गिर नहीं गए, मर नहीं गए। वे खूब चले पर पहुंचे कहीं नहीं ,क्योंकि गोल चक्कर घुमाता है, पहुंचाता नहीं भटकाता है, पहुंचाता नहीं। केवल घूमना हुआ ,पहुंचना नहीं हुआ।

यह काम का मार्ग गोलाकार मार्ग है। वह घुमाता है, पहुंचाता नहीं । समस्या का कोई पार नहीं आता, समस्या के पार तक नहीं पहुंचाता।

चेतना का एक मार्ग है। मार्ग निश्चित ही पहुंचा देता है। हो सकता है कि दो दिन की जगह चार दिन लग जाएं फिर भी एक दिन पहुंचना हो जाता है । जो धीमी गति से चलता हैं, उसका मार्ग लम्बा हो सकता है, समय का कम बदल सकता है, किन्तु निश्चित हो जाती है, आदमी पहुंच जाता है। समस्याओं के समाधान का सबसे बड़ा मार्ग, सबसे पहला या सबसे अन्तिम मार्ग जो है, वह है चेतना को जागरण, चेतना की उद्बुधता, चेतना का विकास ।

हमारी चेतना दो प्रकार की होती है-एक शुद्ध चेतना और एक वासनाग्रस्त चेतना। जो चेतना राग-द्वेष, प्रियता-अप्रियता के भाव से आकान्त होती है, वह वासना की चेतना है। वह शुद्ध चेतना नहीं होती, तटस्थ चेतना नहीं होती । उस चेतना से जो आचरण निकलता है, वह या तो प्रियता की ओर झुका हुआ होता है, या अप्रियता की ओर झुका हुआ होता है । उसमें एक झुकाव होता है, एक पक्षपात होता है, राग होता है या द्वेष होता है, प्रियता होती है या अप्रियता होती है किन्तु स्वतन्त्रता नहीं होती। वह प्रतिक्रियात्मक चेतना होती है। वह रिएक्शनरी चेतना होती है। उसमें रिएक्शन होता है , स्वतन्त्र भाव नहीं होता। जो चेतना शुद्ध है, वह क्रियात्मक होती है । उसमें कहीं भी झुकाव नहीं होता - न प्रियता की ओर होता है और न अप्रियता की ओर होता है। वहां पूर्ण तटस्थता होती है, पूर्ण स्वतंत्रता होती है। जहां जो होना है, वही होता है। वह वास्तव में एक मार्ग है। समस्याओं के समाधान का एकमात्र मार्ग है- शुद्ध चेतना का विकास।

जैन दर्शन ने तीन मार्ग बतलाएं हैं- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र। देखों, जानो और करो। जब तक तुम देखते नहीं हो , जब तक तुम जानते नहीं हो, तब तक जो करते हो , वह पहुंचाने वाला नहीं होता, समस्या का समाधान देने वाला नहीं होता, वह घुमाता है, भटकाता है। सबसे पहली बात है- देखो- जानो या जानो -देखो । जानो और उसका साक्षात करो, स्वयं अनुभव करो और फिर उसका आचरण करो। यह त्रिपुटी है , मार्ग है। इसे महावीर ने मार्ग कहा है, मोक्ष का मार्ग कहा है। यह मुक्ति का मार्ग है, बन्धन से परे होने का मार्ग है, समस्याओं के समाधान का मार्ग है। यह मार्ग है, कोई सम्प्रदाय नहीं है, कोई संस्थान नहीं है, कोई घेराव नहीं है, कोई बन्धन नहीं है। यह कोरा मार्ग है। मार्ग वह होता है, जिस पर किसी का अधिकार नहीं होता। जो सबका होता है, वह होता है मार्ग। उस पर किसी का प्रभुत्व नहीं होता। उसमें सब चल सकते हैं। किसी के लिए कोई बाधा नहीं होती। घेराव में बाधा होती है। मार्ग में बाधा नहीं होती। कोई भी चल सकता है इस मार्ग से और जो भी चलता है, वह पार पहुंच जाता है। यह मार्ग है - चेतना के रूपान्तरण का । यह मार्ग है वासना की चेतना को शुद्ध चेतना में बदलने का। यह मार्ग है दृष्टिकोण को बदलने का। यह केवल नाम बदलने का मार्ग नहीं है। कुछ लोग नाम बदलने में विश्वास करते है। नाम रख दिया, समाधान हो जाएगा।

एक होता है गोल चक्कर और एक होता है मार्ग। मार्ग पहुंचाता है। गोल चक्कर घुमाता है, किन्तु पहुंचाता नहीं। समस्याओं के समाधान का सबसे बड़ा मार्ग, सबसे पहला या सबसे अन्तिम मार्ग जो है, वह है चेतना को जागरण, चेतना की उद्बुधता, चेतना का विकास । चेतना का एक मार्ग है। मार्ग निश्चित ही पहुंचा देता है। हो सकता है कि दो दिन की जगह चार दिन लग जाएं फिर भी एक दिन पहुंचना हो जाता है । जो धीमी गति से चलता हैं, उसका मार्ग लम्बा हो सकता है, समय का कम बदल सकता है, किन्तु निश्चित हो जाती है, आदमी पहुंच जाता है। समस्याओं के समाधान का सबसे बड़ा मार्ग, सबसे पहला या सबसे अन्तिम मार्ग जो है, वह है चेतना को जागरण, चेतना की उद्बुधता, चेतना का विकास ।

इससे समाधान सुलभ नहीं होता, प्राप्त नहीं होता। नामान्तरण हो जाता है, रूपान्तरण नहीं होता। होना चाहिए रूपान्तरण। एक छोटी-सी कहानी है। एक राजनेता ने कहा, आज से सब लोग श्रीखण्ड खाया करेंगे। कोई गरीब नहीं रहेगा। सबको श्रीखण्ड मिलेगा। किसी को छाछ पीने की जरूरत नहीं है।, उसके साथी ने कहा, बात तो ठीक है, इतना पैसा कहां है कि सब लोग श्रीखण्ड खरीद सकें । सरकार भी सबके लिए श्रीखण्ड सुलभ कर सके, यह भी कैसे सम्भव होगा ?आपका सुझाव ठीक है, पर उसकी क्रियान्विति कैसे हो पाएगी? राजनेता ने कहा, चिन्ता मत करो। तुम कल से राज्य में यह घोषणा करवा दो कि कल से छाछ को श्रीखण्ड कहा जाएगा और श्रीखण्ड को छाछ कहा जाएगा।

घोषणा भी हो सकती है, नाम भी बदला जा सकता है। और बदले हुए नाम से गरीब श्रीखण्ड खाया करेंगे और धनवान छाछ पीया करेंगे। यह होता है किन्तु तात्पर्य में कोई परिवर्तन नहीं आता। तात्पर्य कुछ भी नहीं बदलता, चाहे गरीब श्रीखण्ड के नाम से छाछ पीते हैं और अमीर छाछ के नाम से श्रीखण्ड खाते हैं। तात्पर्य में कोई अन्तर नहीं हुआ, नाम का परिवर्तन मात्र हुआ। मैं नाम-परिवर्तन की बात नहीं कहता, चेतना के रूपान्तरण की बात कहता हूं। चेतना का रूपांतरण होना चाहिए, चेतना बदलनी चाहिए । जब चेतना बदल जाती है , तब समस्याओं में से ही समाधान निकल आता है। भगवान् महावीर ने कहा, जे आसवा ते परिसवा, जे परिसवा ते आसवा । जो आस्रव हैं, समस्याएं हैं, वे सब परिस्रव हैं, समाधान हैं और जो परिस्रव हैं, समाधान हैं, वे सब आस्रव हैं, समस्याएं हैं। बहुत मूल्यवान सूत्र है यह। इसी सूत्र के सन्दर्भ में कुछ समाधान प्रस्तुत हैं।

समस्या की चर्चा कर समय मैंने शारीरिक समस्या की चर्चा की थी। शरीर की पहली समस्या है कि वह अनित्य है। अनित्यता एक समस्या है, किन्तु अनित्यता स्वयं एक समाधान है। हमारा सबसे घनीभूत मोह होता है शरीर के प्रति जितने मोह हैं जितनी आसक्तियां हैं, उन सबकी जड़ में है शरीर का मोह। यह जितना घनीभूत होता है, उतनी आसक्ति प्रबल होती है। हम जब तक इस मोह। को नहीं तोड़ देते, तब तक आसक्तियां समाप्त नहीं होतीं। हम जब तक इस मोह से उत्पन्न होता है भय और भय से उत्पन्न होता हे तनाव। यह एक क्रम है- मोह, भय और तनाव। हम तनाव को मिटाना चाहते हैंकि शरीर में तनाव न रहे, टेंशन न रहे । वह कैसे मिट सकता है, जब भय विद्यमान है। हमें इतना भय है कि शरीर छूट न जाए। यह वासना निरन्तर काम करती रहती है कि शरीर कहीं छूट न जाए। हमने शरीर को इतना शाश्वत मान लिया और शाश्वत मानकर एक भय पैदा कर लिया कि सोते- जागते वह भय काम करता रहता है। यह भय हमें निरन्तर तनाव- ग्रस्त रखता है । इसलिए महावीर ने कहा, डरो मत। जब तक डरते हो, तब तक किसी भी धर्म का पालन नहीं हो सकता। न अहिंसा का पालन हो सकता है, न सत्य का पालन हो सकता है न अपरिग्रह का पालन हो सकता है। आदमी हिंसा इसीलिए करता है कि वह डरता है ।वह झूठ इसीलिए बोलता है कि वह डरता है,और परिग्रह इसीलिए एकत्रित करता है कि वह डरता है। उसे भय ही परिग्रह का मूल है। इसीलिए महावीर ने कहा, डरो मत । मैं समझता हूं कि तनाव को मिटाने का सबसे अच्छा सूत्र है- अभय, भय नहीं खाना, डरना नहीं ।

.यह भय कैसे मिट सकता है -यह एक प्रश्न है। महावीर ने कहा, भय को मिटाना है तो शरीर का विसर्जन कर दो। शरीर का त्याग कर दो यानी जीते हुए भी शरीर को छोड़ दो। आप जी रहे हैं, शरीर का त्याग किए हुए हैं। विरोधी-सी बात लगती है। हम जी रहे हैं। खा रहे हैं, पी रहे हैं, श्वास ले रहे हैं, और साथ-साथ शरीर का त्याग किये हुए हैं- यह कैसे ?यही तो एक मर्म है। इसे ही तो हमें समझना है। सब कुछ शरीर से कर रहे है। और शरीर का उत्सर्ग और परित्याग किये हुए हैं। जब सब कुछ करते हुए भी शरीर को छोड़ने की बात हमारी समझ में आ जाती है तो भय भी चला जाता है। शरीर का उत्सर्ग अर्थात् शरीर सब कुछ कर रहा है, पर हम शरीर से भिन्न हैं। जब हम अपने आप को शरीर से अभिन्न मान लेते हैं, तब एक प्रकार की क्रिया होती है, एक प्रकार का आचरण होता है और जब हम अपने आपको शरीर से भिन्न मान लेते हैं, तब दूसरे प्रकार की क्रिया होती है, एक प्रकार का आचरण होता है। हमने शरीर के साथ इतना अभिन्नता, इतना तादात्म्य स्थापित कर रखा है कि मानो शरीर के लिए हम हैं, हमारे लिए शरीर नहीं है। होना तो यह चाहिए था कि हमारे लिए शरीर, है, हम शरीर के लिए नहीं हैं। शरीर के प्रति स्थापित अभिन्नता और तादात्म्य के कारण ही शाश्वत का भाव उपजा और उसमें से मोह का भाव निकला । महावीर ने कहा, शरीर के मोह को छोड़ो और वह भी विवेकपूर्वक, चेतना के जागरण के द्वारा , इस बोध के द्वारा कि शरीर पौद्गलिक है और मैं चेतन हूं। चेतन और पुद्गल एक नहीं है । मैं पौद्गल से भिन्न हूं। शरीर मुझसे भिन्न है, मैं शरीर से भिन्न हूं। शरीर एक ऐसा घर है, आवास है,कि जहां मैं कुछ दिन के लिए ठहरा हूं । यदि यह भिन्नता का बोध बना रहता है तो शरीर के प्रति होने वाली मोह की ग्रन्थि सघन नहीं होती । जब मोह की ग्रन्थि सघन नहीं होती तो भय की ग्रन्थि भी सघन नहीं हो सकती। भय के अभाव में तनाव भी नहीं हो सकता। जो अनित्यता का बोध आदमी को बेचैन किए रहता है , एक समस्या बना रहता है यदि हम उस अनित्यता का इस रूप में अनुभव करें तो वही अनित्यता हमारे लिए समाधान बन जाती है। तनाव - विसर्जन का यही यथार्थ समाधान है।

कोरबा। जगन्नाथ पुरी के शंकराचार्य श्री निश्चलानंद जी को ब्रह्माकुमारीज़ की और से ईश्वरीय भेंट देते हुए ब्र.कु.बिन्दू बहन

जबलपुर । मानवता की सेवा में व्यापार एवं उद्योग कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.विमला, ब्र.कु.अनिता, हेमलता, अजय ग्रोवर, नारायण दास बुधरानी ब्र.कु.पुष्पाबेरी ,लिज्जत पापड।

पतली कुल्ह हि.प्र.। मेम्बर, बीडीसी के प्रमिला ठाकुर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. संध्या, ब्र.कु.साधना साथ में ब्र.कु. हेमराज।

अलथान- सुरत। गृह मंत्री नरोत्तमभाई को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी साथ मे ब्र.कु.क्रांति।

तरावडी करनाल। १२ ज्योर्तिलिंगम मेले का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.अमीरचंद,आयुक्त रेणु फुलिया, उद्योगपति पंकज गोयल, ब्र.कु. सुदेश, ब्र.कु. सुधा ब्र.कु. दिनेश।

वलसाड। अलविदा तनाव कार्यक्रम का उद्घाटन के बाद ब्र.कु. रोहित,आरोग्य के अध्यक्ष धर्मा देसाई,अर्चना देसाई, ब्र.कु.रंजन,रशिम , ब्र.कु. पारूल ।